

१५४

(राग: मांड - ताल: धुमाळी)

शाम कठे जाशी रे संतनके चित्तचोर ॥ध्रु. ॥ अनादि माया  
भवप्रवाह जल उचक उचक लहराय। तामें बसे जीव जगसारा

---

डूबडूब मरजाय ॥१॥ दिनानाथ ब्रीद अपनी राखो, तुम पतितनके  
सर ताज। कैसे छांड जाओगे हमको बहाँ पकरिसो लाज ॥२॥  
यहि अरज है सब पतितनकी हृदयकमल रह जाओ। ज्ञानरूप  
मार्ताण्ड प्रभु तुम एकरूप दरसाओ ॥३॥